

की तिलावत करे तकबीर कहो और दोनो हाथ उठा कर कुनूत पढ़ें” रखना आतेना अजाबिन नार” फिर रुकू और सुजूद बजा लाए और उसके बाद तशहूद पढ़ें दो जानू रुबा क्बिला। तशहूद “अश हदाअन..... मोहम्मद” अगर आप फज्र पढ़ रहे हैं तो सलाम पढ़ले वरना बिहौलिल्लाह..... कहके फिर खड़े हो जाए और तीसरी रकआत अदा करे।

तीसरी रकअत।

तीसरी रकअत में खड़े होने के बाद या तो एक बार सूरए फातेहा पढ़ें या तीन बार तसबीहाते अर्बा पढ़ें (सुबहानल्लाहे वलहमदो लिल्लाहे व लाइलाहा इल्लल्लाहो वल्लाहो अकर व लिल्लहिल हम्द) फिर रुकू अंजाम दे सजदे बजा लाए और अगर नमाजे मगरिब है तो तशहूद बरूलाम पढ़ें। नमाज तमाम करे वरना “बिहौलिल्लाह.... कह कर खड़े हो जाए और चौथी रकअत शुरू कर दे।

चौथी रकअत।

तीसरी रकअत जैसी है सिवा इसके तशहूद वसलाम अदा करके नमाज तमाम करे।

सलाम:

आखरी रकअत अंजाम देने के बाद तशहूद पढ़कर यह सलाम पढ़ें।

अस्सलामों अलैका व बरकातोह तक पढ़ें और उसके बाद तीन बार तकबीर कहते हुए नमाज तमाम करे।

रोज़ाना की नमाज़ों को कैसे अदा करें?

रोज़ाना की नमाज़ों को कैसे अदा करें?

पंजगाना नमाज़ को अदा करना ज़रूरी है इनके अवकात

पर

१. सुबह की नमाज़ : दो रकआत होती है।
२. नमाज़े ज़ोहर : चार रकआत।
३. नमाज़े अस्त्र : चार रकआत।
४. नमाज़े मग़रिब : तीन रकआत।
५. नमाज़े इशा : चार रकआत।

इन पंजगाना नमाज़ों की अदा करने के लिए फ़िक्रए जाफिरिया ने एक तरतीब बना रखी है और जो नमाज़े एक के बाद एक यानी ज़ोहर के बाद अस्त्र उससे ज़्यादा ग़ैर ज़रूरी ताखीर (मुआलात) नहीं होना चाहिए। इंसान को पहले अपनी तहारत करना चाहिए (गुस्ल वजू) और दूसरे एहकाम के वजन लाना चाहिए।

तरीक़ए नमाज़:

रूख़ क़िबले की तरफ़ करके खड़ा हो जाए फिर अज़ानो अक्रामत कहे। तवज्जोह रहे सारे कतयातब - जबाने अरबी अदा करें हौला के नीचे उनका तरजुमा दिया हुआ है मगर ज़रूरी है कि अरबी जबान मए क़िरअत के सीखें।

पहली रकआत:

१. नीयत: इस जुमले से नियत करें “मै इस नमाज़ (नमाज़ का नाम) को जिसमें दो दो रकआत है पढ़ता हूँ कुर्बतन इलल्लाहा”

२. तकबीर तुल एहराम: पहली रकआत, दोनों हाथ कानो तक उठाए और कहिए “अल्लाहो अकबर”
३. क़यामत: सूरे पढ़ते वक़्त सीधा खड़ा रहे।
४. क़िरअत: सूरे क़िरअत से अदा करें सुरेए फ़ातेहा। बिस्मिल्लाजाल्लीन। सूरे इन्ना अन्ज़लना फ़ज़ तक पढ़ें। फिर तकबीरतुल एहराम कहे और रूकूअ में जाए।
५. रूकूअ: दोनों हाथ घुटनों पर रखकर झुक जाए और यह ज़िक्र तीन बार अदा करें “सुब्हाना रब्बियल अज़ीमे व बे हम्देह” फिर सीधे खड़े होकर कहे “समे.....हम्देह” उसके बाद तकबीर कहे और सजदे में जाए।
६. सजदा: सजदे का मतलब है कि नमाज़ अदा करने वाला अपने माथे को इस तरह ज़मीन पर रख दे के जैसे खुदा के सामने उसकी कोई वक़अत नहीं सजदा करते वक़्त (सात) हिस्से सब ज़मीन को छुए। जैसे पेशानी दोनों हथेलियों दोनों घुटने दोनों पैर के अंगूठे। और यह ज़िक्र तीन बार अदा करें। “सुब्हाना बेहमदेह” पहले सजदे के बाद सर उठाए और घुटने मोड़कर बैठे ऐसे के दाहिना पैर बाएं के ऊपर हो और दोनों हाथ दोनों जांघों पर हो और तकबीर कहे (मुस्तहब) है कि कहे “अस्तग..... इलैह फिर तकबीर अदा करें और दूसरा सजदा बजा लाए, उसके बाद फिर दो जानू बैठे (लम्हाभर) और फिर खड़े होते वक़्त मुस्तहब है कि यह कहे “बहौल वक़ऊद।

दूसरी रकआत।

फिर सीधे खड़े हो जाए और सुरेए फ़ातेहा व सुरेए इख़्तास